भगवान विष्णु के ग्यारह अवतारों में से दूसरा अवतार कूर्मावतार है। पुराणों के अनुसार कूर्मावतार के रूप में भगवान विष्णु ने क्षीर सागर में समुद्र मंथन के समय मंदार पर्वत को अपनी पीठ (कवच) पर धारण कर लिया था। पद्मपुराण के अनुसार इंद्र ने दुर्वासा द्वारा प्रदत्त पारिजात माला का अपमान किया तो दुर्वासा के श्राप के अनुसार इंद्र का वैभव नष्ट हो गया परिणामस्वरूप लक्ष्मी समुद्र में विलुप्त हो गई। तब भगवान विष्णु ने लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करने के लिए वासुकी नाग की डोर तथा मंदराचल पर्वत की मथनी बनाकर समुद्र मंथन करवाया। मंथन के समय जब मंदराचल पर्वत रसातल में जाने लगा तो विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया और मंदार पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया। देवताओं तथा दानवों ने समुद्र मंथन से अमृत एवं लक्ष्मी सहित चौदह रत्नों की प्राप्ति की। पौराणिक चित्रों में कछुए की प्रजातियों को गंगा एवं यमुना के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

© आशा जैन

पुराणों में गंगा के जीव

कूर्मावतार (कछुआ)

गंगा नदी में पाई जाने वाली कछुए की प्रजातियां

भारत में पाये जाने वालें ताजे पानी के कछुओं की 24 प्रजातियों में से 13 प्रजाति के कछुए गंगा में पाये जाते हैं।

महत्व

कछुआ जलीय पौधों को नियंत्रित करता है, नदी तथा पोखर को स्वच्छ तथा पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाये रखने में अहम् भूमिका निभाता है।

संकट के कारण

प्राकृतिक आवासों का ह्रास एंव अवैध शिकार।

पौराणिक कथाओं के अनुसार मकर, एक मिथिकीय प्राणी है और देवी गंगा और समुद्र के देवता वरूण का वाहन है। ये प्रेम के देवता कामदेव का प्रतीक चिह्न भी है और उनके ध्वज जिसे कर्क ध्वज भी कहा जाता है, पर चित्रित है।

परंपरागत रूप से मकर को एक जलीय प्राणी माना जाता है कुछ पौराणिक कथाओं में इसे घड़ियाल के साथ जोड़ा गया है जबकि कुछ में इसे सूंस (डॉल्फिन) माना गया है। कुछ पौराणिक कथाओं में इसे एक ऐसे जीव के रूप में चित्रित किया है जिसमें उसका शरीर मीन का है किंतु सिर एक गज का है। ज्योतिष में मकर बारह राशियों में से एक है।

© आशा जैन

पुराणों में गंगा के जीव

मकर (माँ गंगा का वाहन)

गंगा में रहने वाली प्रजाति

गंगा में मुख्यतः मगर की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। ये प्रजाति अत्यधिक हिंसक तथा उच्च कोटि के शिकारी होने के कारण लगातार भ्रमण करते रहते हैं। उनके इस भ्रमण के फलस्वरूप वे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के पोषक तत्वों की पूर्ति करते रहते हैं और जलीय जीवों के प्राकृतिक आवासों को आपस में जोड़े रखने में अहम् भूमिका निभाते हैं। सामान्यतः मगर और अन्य खारे पानी में रहने वाले मगर की प्रजातियां पूरे पारिस्थितिकी तंत्र में आ और जा सकते हैं एंव सम्पूर्ण जलीय खाद्य श्रंखला की पौष्टिकता को बनाये रखते हैं।

महत्व

पानी में मगर प्रजातियां बीमार और मरी हुई मछलियों को खा कर पारिस्थितिकी तंत्र में मछलियों की प्रजातियों की स्वस्थ खाद्य श्रंखला को बनाये रखती है।

संकट के कारण

आवासों का ह्रास, जाल में फसने से मृत्यु।

© आशा जैन

पौराणिक कथाओं के अनुसार देवी गंगा का जब स्वर्ग से अवतरण हुआ था उनके साथ अवतरित हुए अनेक जीवों में से गांगेय डॉल्फिन भी एक थी। ये भी मान्यता है कि गांगेय डॉल्फिन देवी गंगा की वाहन है।

पुराणों में
गंगा के जीव

गांगेय डॉल्फिन

गंगा में रहने वाली प्रजाति

गंगा नदी में रहने वाली गांगेय डॉल्फिन को भारत में सन् 2004 में राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया गया है। सम्पूर्ण विश्व में पाई जाने वाली ताजे पानी की चार डॉल्फिन की प्रजातियों में से एक गांगेय डॉल्फिन भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से पाई जाती हैं। नदी में इसकी मौजूदगी एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र की परिचायक है।

पारिस्थितिकी तंत्र में भूमिका

एक उच्च कोटि की शिकारी होने के कारण डॉल्फिन लगातार भ्रमण करती रहती है, ये पोषक तत्वों तथा ऊर्जा की संवाहक है जिसके कारण सम्पूर्ण जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के मध्य आपस में सामंजस्य बना रहता है।

संकट के कारण

आवासों का आपस का सम्बंध समाप्त होना, शिकार की कमी होना।

गंगा जैवविविधता संरक्षण

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

नमामि गंगे

मनुष्य ने पहली कविता कब लिखी यह बता पाना कठिन है परंतु संस्कृत के आदिकवि बाल्मीकि के विषय में कहा जाता है कि काव्य की पहली रचना उन्हीं के द्वारा हुई बाल्मीकि रामायण में सारस जैसे पक्षी क्रौंच का वर्णन भी आता है। ऋषि बाल्मीकि भगवान श्री राम के समकालीन थे।

एक दिन सुबह गंगा के पास बहने वाली तमसा नदी में मुनि बाल्मिकी अपने शिष्य के साथ स्नान के लिये गये वहो नदी के किनारे क्रोंच पक्षी का जोड़ा अपने में मगन थाए तभी व्याध ने इस जोड़े में से नर क्रोंच को अपने बाण से मार गिराया। मादा क्रोंच भयानक विलाप करने लगी। उस घटना को देखकर बाल्मिकी का हृदय इतना द्रवित हुआ कि उनके मुख से अचानक श्लोक निकल गया।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शास्वती समा।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

© कैथी ए. तैय्यबी

पुराणों में गंगा के जीव
क्रौंच पक्षी (सारस क्रेन)

गंगा में रहने वाली प्रजाति

गंगा के तटीय किनारों में 129 जलीय एवं प्रवासी पक्षियों समेत पक्षियों की लगभग 140 प्रजातियां प्रवास करती हैं। सारस क्रेन उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी है।

पारिस्थितिकी तंत्र में भूमिका

जलीय पक्षी जैव विविधता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, ये कीटों को नियंत्रित रखते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र में किसी भी प्रकार के बदलाव के सूचक होते हैं, जलीय स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाले तत्वों से बचाते हैं।

संकट के कारण

आर्द्रभूमि में परिवर्तन, अवैध शिकार, खेती में हानिकारक रसायनों का प्रयोग।

गंगा जैवविविधता संरक्षण

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

नमामि गंगे

© आशा जैन

बौद्ध धर्म के अनुसार आठ शुभ चिन्हों में स्वर्ण मछली को भी एक चिन्ह के रूप में दर्शाया गया है जो कि निर्भय जीवन जीने का प्रतीक है जिस प्रकार मछली निर्भय हो कर तैरती है उसी प्रकार प्राणीमात्र को निर्भय हो कर जीवन जीना चाहिये। प्राचीन बौद्ध धर्म मतानुसार अष्टमंगल चिन्ह में दर्शाये गये मत्स्ययुग्म को गंगा और यमुना का प्रतीक माना गया है, ये मत्स्य युग्म ज्ञान, समृद्धि, प्रचुर उर्वरकता की प्रतीक हैं।

पुराणों में गंगा के जीव
मत्स्यावतार (मछली)

गंगा की प्रजातियां

गंगा नदी में 60 फैमिली की 236 प्रजाति की मछलियां पाई जाती हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र में भूमिका

पारिस्थितिकी तंत्र की पौष्टिक आहार श्रृंखला में मत्स्य प्रजाति की भूमिका बहुत अहम् है। इनमें मिनरल, नाइट्रोजन,फॉस्फोरस आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

संकट के कारण

अत्यधिक दोहन तथा उनके प्राकृतिक आवासों में बदलाव के कारण मछलियों की बहुत सारी प्रजातियां खतरे में हैं।

गंगा जैवविविधता संरक्षण

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

नमामि गंगे